प्रादर्श प्रश्न पत्र 2012

विषय – हिन्दी विशिष्ट

कक्षा – दसवीं

समय– 3 घंटे **पूर्णांक– 100**

निर्देश–

1. सभी प्रश्न अनिवार्य है।
2. प्रत्येक प्रश्न के लिए आवंटित अंक उनके सामने अंकित है।
3. प्रश्न क्र. 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए है। प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 x 5 x 5 = 25 अंक निर्धारित है।
4. प्रश्न क्र. 6 से 15 तक में प्रत्येक का उत्तर लगभग 50 से 75 शब्दों में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु 4 अंक निर्धारित है।
5. प्रश्न क्र. 16 से 20 तक में प्रत्येक का उत्तर 100 से 120 शब्दों में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु 5 अंक निर्धारित है।
6. प्रश्न क्र. 21 का उत्तर लगभग 250/300 शब्दों में लिखिए। इसके लिए 10 अंक निर्धारित है।

प्रश्न 1. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्द का चयन कर कीजिए।

(i) तुलसीदास जी भक्तिकाल के.....धारा के कवि है।

(सगुण/निर्गुण)

(ii) आधुनिकता.....का विरोध करती है।

(जाति/संप्रदाय)

(iii) बेटियां.....कामनाएं है।

(पावन/अपावन)

(iv) द्वन्द्व समास में.....पद प्रधान होते है।

(दोनों / तीनों)

(v) संचारी भावों की संख्या.....मानी गई है।

(33 / 11)

प्रश्न 2. निम्नलिखित कथनों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए :–

(अ) खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है –

(क) कामायनी (ख) प्रियप्रवास

(ग) साकेत (ग) रामचरितमानस

(ब) फणीश्वरनाथ रेणु कृत मैला आंचल है –

(क) कहानी (ख) उपन्यास

(ग) यात्रावृतांत (घ) संस्मरण

(स) कुछ लोग बड़े निर्दोष होते है –

(क) सत्यावादी (ख) अहिंसावादी

(ग) मिथ्यावादी (घ) हिंसावादी

(द) अत्यावश्यक का संधि विच्छेद होगा –

(क) अत्य+आवश्यक (ख) अत्या+आवश्यक

(ग) अति+आवश्यक (घ) इनमें से कोई नहीं

(इ) दोहे में मात्राएं होती है –

(क) 16 (ख) 24

(ग) 26 (घ) 28

प्रश्न 3. निम्नलिखित वाक्यांशों की सही जोड़ी बनाइये–

	क	–	**ख**
1.	सूरदास	–	गेहूं और गुलाब
2.	शल्य यंत्रों की संख्या	–	अनुप्रास अंलकार

3.	तरनि तनूजा तह तमाल बहु छाए	–	अपठित
4.	रामवृक्ष बेरीपुरी	–	सूर सारावली
5.	जो पढ़ा हुआ न हो	–	101

प्रश्न 4. निम्नलिखित वाक्यों में सत्य/असत्य बताइये –

1. नगार्जुन प्रगतिशील कवि है।
2. मैं और मेरा देश आचार्य हजारी प्रसाद का निबंध है।
3. आमरण अव्ययी समास का उदाहरण है।
4. उल्लाला एक मात्रिक छन्द है।
5. निंदा का उद्‌गम ही हीनता और कमजोरी से होता है।

प्रश्न 5. एक वाक्य में उत्तर दीजिए –

1. किसका स्पर्श जड़ में भी स्फूर्ति पैदा करता है?
2. देश के सौंदर्य बोध के आघात से किसको गहरी चोट पहुंच रही है?
3. हवा से तेज चलने वाला कौन है?
4. गागर में सागर भरना मुहावरे का क्या अर्थ है?
5. रसों की संख्या कितनी होती है?

प्रश्न 6. सूरदास ने किस आधार पर ईश्वर को समदर्शी कहा है?

अथवा

कवि गिरिधर के अनुसार अपने मन की बात क्यों प्रकट नहीं करनी चाहिए।

प्रश्न 7. चलने के पूर्व बटोही को कवि किन–किन बातों के लिए आगाह कर रहा है?

अथवा

दुर्बल को सताने का क्या दुष्परिणाम होता है?

प्रश्न 8. रीतिकाल की कोई दो विशेषताएं लिखिए एवं दो रीतिकालीन कवियों के नाम लिखिए।

अथवा

छायावाद की कोई दो विशेषताएं लिखिए एवं दो कवियों के नाम एवं रचनाएं लिखिए।

प्रश्न 9. नाटक और एकांकी में चार अंतर लिखिए।

अथवा

कहानी की एक परिभाषा लिखिए एवं किन्हीं दो कहानीकारों के नाम एवं उनकी एक–एक रचना लिखिए।

प्रश्न 10. गांव के सुसंस्कृत आदमी की चार विशेषताएं लिखिए।

अथवा

परंपरा और आधुनिकता में कोई दो अंतर लिखिए।

प्रश्न 11. माई की बगिया कहां स्थित है एवं यह क्यों प्रसिद्ध है?

अथवा

वनवास की कठिनाइयों के बीच अर्जुन, भीम और युधिष्ठिर ने कौन–कौन सी शक्तियां प्राप्त की।

प्रश्न 12. अतिश्योक्ति अलंकार की परिभाषा लिखिए एवं एक उदाहरण लिखिए।

अथवा

महाकाव्य एवं खण्डकाव्य में चार अंतर लिखिए।

प्रश्न 13. (अ) निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए।

1. खून पसीना एक करना।

2. आकाश के तारे तोड़ना।

(ब) निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए।

1. गौरव पुस्तक पढ़ता है। (निषेधात्मक)

2. माता–पिता की सेवा करो। (प्रश्नवाचक)

(स) अनेक शब्द के लिए एक शब्द लिखिए।

1. तपस्या करने वाला।

2. जो दूर की बात सोचता हो।

अथवा

(अ) रचना की दृष्टि से वाक्य के कितने भेद होते है? नाम लिखिए।

(ब) निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों का शुद्ध रूप लिखिए।

1. मोहन आटा पिसा कर लाया।

2. कुत्ता दरबान की तरह पूंछ हिलाता हुआ दरवाजे पर खड़ा था।

(स) निम्नलिखित उदाहरण में कौन सा रस है नाम लिखिए।

''जे नर माछी खात है, मूड़ा पूंछ समेत।
ते नर सरगै जात है, नाती पूत समेत।।''

प्रश्न 14. बिहारी या जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताएँ निम्न बिन्दुओं के आधार पर लिखिए।

1. दो रचनाएँ

2- भावपक्ष, कला पक्ष,

3. साहित्य में स्थान

प्रश्न 15. हजारी प्रसाद द्विवेदी या पं. रामनारायण उपाध्याय का साहित्यिक परिचय निम्न बिंदुओं के आधार पर लिखिए :–

1. दो रचनाएँ,

2. भाषा शैली

3. साहित्य में स्थान

प्रश्न 16. निम्नलिखित में से किसी एक पद्यांश की संदर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :–

ऊंचै कुल क्या जनमियां, जे करणी ऊंच न होई।
सोवन कलस सुरै भर्‌या, साधू निंद्या सोइ।।
तरवर तास बिलंबिए, बारह माल फलंत।
सीतल छाया गहर फल, पंखी केलि करंत।।

अथवा

वर दंतकी पंगति कुंदकली अपराधर–पल्लव खोलन की।
चपला चमकैं घन बीच जगैं छवि मोतिन माल अमोलन की।।
घुंघरारि लहैं लटकैं मुख ऊपर कुंडल लोल कपोलन की।
नेवछावरि प्रान करै तुलसी बलि जाउं लला इन बोलन की।।

प्रश्न 17. निम्न लिखित में से किसी एक गद्यांश की संदर्भ प्रसंग सहित व्याख्या कीजिएः–

कृष्ण भारत वर्ष के लिए एक अमूल्य निधि है, वे हमारी राष्ट्रीय संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि है। जिस प्रकार पूर्व और पश्चिम के समुद्रों के बीच प्रदेश को व्याप्त करके गिरिराज हिमालय पृथ्वी के मानदण्ड की तरह स्थित है, उसी प्रकार ब्रह्मधर्म और क्षात्रधर्म इन दो मर्यादाओं के बीच की उच्चता को व्याप्त करके श्रीकृष्ण चरित्र पूर्ण मानवी विकास के मानदण्ड की तरह स्थित है।

अथवा

लेकिन मनुष्यों का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहां छिपा है।

प्रश्न 18. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

जिस मनुष्य का जिस पर स्नेह रहता है, वह उसकी अनुपस्थिति में चिंतित हो उठता है ओर उसके संबंध में तरह–तरह की आशंकाएं और भय करने लगता है। प्रियजन का बाहर जाना तो क्या यदि वह घर के ही उद्यान में या घर के ही आंगन में आंखों से परे हो जाये तो मन में चिंता हो जाती है कि पता नहीं उस पर क्या मुसीबत आ पड़ी है जो अभी तक लौट कर नहीं आया। वास्तव में प्रेम ऐसी वस्तु है जो बहुत कातर है। उसमें धीरज नहीं, समझ नहीं, केवल आकुलता और अनिष्ट शंका ही घर किये रहती है। प्रेम में यह कमजोरी विशेष रूप से अखरती है। प्रेम अशांत ही रहता है।

प्रश्न 1. अनुपस्थिति शब्द का संधि विच्छेद कीजिए?

2. उपरोक्त गद्यांश का सटीक शीर्षक लिखिए।

3. उपरोक्त गद्यांश का सारांश 30–40 शब्दों में लिखिए।

4. वास्तव में प्रेम क्या है?

5. उद्यान का एक पर्यायवाची शब्द लिखिए।

प्रश्न 19. इन्दौर नगर पालिका के अध्यक्ष को एक पत्र लिखिए जिसमें मोहल्ले की सफाई न होने की शिकायत की गई हो।

अथवा

समाचार पत्र पढ़ने की उपयोगिता बताते हुए छोटे भाई को एक पत्र लिखिए।

प्रश्न 20. निम्न लिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखिए?

1. आतंकवाद से जूझता भारत
2. स्वदेश प्रेम
3. जीवन में खेलों का महत्व
4. पर्यावरण प्रदूषण।

– – – – – –

आदर्श उत्तर

हिन्दी विशिष्ट

कक्षा–X

उत्तर 1. रिक्त स्थान की पूर्ति –

1. सगुण
2. संप्रदाय
3. पावन
4. दोनों
5. 33

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 2. सही विकल्प का चयन :–

1. कामायनी
2. उपन्यास
3. मिथ्यावादी
4. अति+आवश्यक
5. 24

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 3. सही जोडियां बनाइयें –

	क	–	**ख**
1.	सूरदास	–	सूर सारावली
2.	शल्य यंत्रों की संख्या	–	101
3.	तरनि तनूजा तह तमाल बहु छाए	–	अनुप्रास अंलकार

4. रामवृक्ष बेरीपुरी – गेहूं और गुलाब

5. जो पढ़ा हुआ न हो – अपठित

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 4. सत्य/असत्य का चयन –

1. सत्य
2. असत्य
3. सत्य
4. सत्य
5. सत्य

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 5. एक वाक्य में उत्तर दीजिए –

1. श्रृद्धा का स्पर्श जड़ में भी स्फूर्ति पैदा करता है।
2. देश के सौंदर्य बोध के आघात से देश की संस्कृति को गहरी चोट पहुंच रही है।
3. हवा से तेज चलने वाला मन है।
4. कम शब्दों में अधिक कहना मुहावरे का अर्थ है।
5. रसों की संख्या नौ होती है।

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 6. सूरदास ने कहा है कि ईश्वर समदरसी है वह पापी, पुण्यात्मा में भेदभाव नहीं करता सबका उद्धार करता है। जिस प्रकार स्पर्श करने पर पारस पत्थर लोहे को स्वर्ण बना देता है, फिर चाहे लोहा पूजा घर का हो या कसाई के यहां का। गंगा में मिलने पर नदी और नाले का पानी गंगा की संज्ञा प्राप्त कर लेते है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

कवि गिरिधर के अनुसार मनुष्य को अपने मन की बात भूलकर भी किसी को नहीं कहनी चाहिए। जब तक वह कार्य नहीं हो जाता, तब तक उसे मन में ही रखना चाहिए। यदि हमने कार्य होने के पूर्व कह दिया और असफलता हाथ लगी तो लोग हंसेंगे। अतः पहले कार्य पूर्ण करें। इससे सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि दुर्जन आप पर हंसेगा नहीं तथा आप शांत होकर रहें।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 7. चलने के पूर्व बटोही को कवि निम्न बातों के लिए आगाह कर रहा है। पंप की पहचान करना, चित्त का अवधान करना, न रूकने की प्रतिज्ञा करना, सत्य का ज्ञान करना आदि। इन सब बातों का ध्यान रखकर ही कवि अपनी मंजिल तक पहुंच सकता है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

दुर्बल को सताने से उसके मुंह से निकली आह मनुष्य को भस्म कर देती है, जिस प्रकार मरे हुए जानवर की खाल की श्वांस से लोहा भी भस्म हो जाता है इसलिए दुर्बल व्यक्ति को सताना नहीं चाहिए।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 8. रीतिकाल की विशेषताएं निम्नलिखित है –

1. इस काल में लक्षण ग्रंथों की भरमार रही। रस अलंकार, छंद आदि पर अनेक लक्षण ग्रंथ लिखे गये।
2. नख–शिख वर्णन, नायिका भेद, षटऋतु वर्णन एवं बारहमासा का व्यापक वर्णन किया गया।
3. इस काल की भाषा ब्रज रही। हिन्दी अपभ्रंश से मुक्त हो चुकी थी।

प्रमुख कवि		**रचनाएं**
बिहारी	–	बिहारी सतसई
केशवदास	–	रामचन्द्रिका

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

छायावाद की विशेषताएं –

1. प्रकृति का मानवीकरण रूप में चित्रण।
2. स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह।
3. स्वछंद कल्पना
4. लाक्षणिक प्रयोग

छायावादी कवि		**रचनाएं**
जयंशकर प्रसाद	–	कामायनी
सुमित्रानन्दन पंत	–	पल्लव।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 9. कहानी वास्तविक जीवन की एक ऐसी काल्पनिक कथा है जो छोटी होते हुए भी पूर्ण और संसगठित होती है।

कहानी और उपन्यास में अंतर –

सं.क्र.	**नाटक**	**एकांकी**
1	नाटक में अनेक अंक होते है।	एकांकी में एक अंक होता है।
2	नाटक में अधिकारिक कथा के साथ–साथ सहायक गौण कथाएं भी होती है।	एकांकी में एक ही कथा और घटना होती है।
3	नाटक में चरित्र का क्रमशः विकास दर्शाया जाता है।	एकांकी में पात्रों की क्रियाकलापों और चरित्रों का संयोजन इस रूप में

		होता है कि एकांकी होते हुए भी उसके व्यक्तित्व का समूचा बिम्ब मिल जाए।
4	नाटक के कथानक में फैलाव और विस्तार होता है।	एकांकी के कथानक में ही घनत्व रहता है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

कहानी की परिभाषा –

रवीन्द्रनाथ टैगोर – ''नदी जैसे जलस्त्रोत की धारा है, मनुष्य वैसे ही कहानी का प्रवाह है।''

हडसन – ''कहानी में चरित्र व्यक्त होता है।''

कहानीकार		**रचनाएं**
जयशंकर प्रसाद	–	पुरस्कार
प्रेमचंद	–	पूस की रात
चंद्रधर शर्मा गुलेरी	–	उसने कहा था।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 10. गांव के सुसंस्कृत आदमी की विशेषताएं –

1. वह विश्वास पर बिक जाता है, धर्म पर झूकता है।
2. सब कुछ सहता है, परंतु शिकायत नहीं करता है।
3. सबकी सुनता है पर अपनी ओर से कुछ नहीं कहता है।
4. वह कभी थक कर नहीं बैठता, झुक कर नहीं चलता है।
5. त्याग में से प्राप्ति तथा परिश्रम में से आनंद प्राप्त करता है।
6. समूचे गांव को अपना परिवार मानता है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

परंपरा व आधुनिकात में अंतर –

सं.क्र.	**परंपरा**	**आधुनिकता**
1	खडा पैर परंपरा है।	चलता पैर आधुनिकता है।
2	एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हूबहू नहीं मिलता है। उनमें कुछ न कुछ छंटता रहता है, बदलता रहता है, जुड़ता रहता है, वही परम्परा है।	इस समय जो कुछ है, उसे ही आधुनिक कहा जाता है।
3	आधुनिक विचारों की जड़े परंपरा की गहराई तक होती है।	कोई भी आधुनिक विचार आसमान में पैदा नहीं होता।
4	परंपरा यात्रा का अंतिम चरण है।	आधुनिकता आगे बढ़ा हुआ गतिशील कदम है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 11. नर्मदा के उत्स कुंड से थोड़ा ऊपर चलने पर माई की बगियां है। माई की बगिया पहाड़ी को काटकर बनाई गई एक बगीची है, यहां से एक जलधारा प्रवाहित होती है। यहां पर स्थित गुलाब कावली के फूलों के रस से आंखों की दवा बनाई जाती है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

वनवास की कठिनाईयों के बीच अर्जुन ने इन्द्रदेव से दिव्यास्त्र प्राप्त किया। भीमसेन ने भी सुगन्धित फूलों वाले सरोवर के पास हनुमान से भेंटकर, उनका

आलिंगन प्राप्त करके दस हजार गुना अधिक शक्तिशाली हो गया। युधिष्ठिर ने धर्मदेव से गले मिलने का सौभाग्य पाया।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 12. अतिश्योक्ति अलंकार – जहां लोक सीमा का अतिक्रमण करके किसी वस्तु या व्यक्ति का वर्णन बढ़ा चढ़ाकर किया जाये, वहां अतिश्योक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण– हनुमान की पूंछ में, लग न पाई आग।
लंका सारी जल गई, गए निशाचर भाग।।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

महाकाव्य व खण्डकाव्य में अंतर –

सं.क्र.	**महाकाव्य**	**खण्डकाव्य**
1	महाकाव्य में आठ या आठ से अधिक सर्ग होते है।	खण्डकाव्य में जीवन की किसी एक घटना अथवा एक पक्ष का वर्णन होता है।
2	महाकाव्य का नायक धीरोदात्त, धीर ललित, धीर प्रशांत होना चाहिए। उसका चरित्र महान होना चाहिए।	खण्डकाव्य का नायक इतिहास प्रसिद्ध होता है।
3	महाकाव्य में किसी पौराणिक या ऐतिहासिक विशिष्ट व्यक्ति का संपूर्ण जीवन चरित्र वर्णित होता है।	खण्डकाव्य में किसी एक घटना के माध्यम से किसी महान आदर्श की अभिव्यक्ति होती है।
4	महाकाव्य में अनेक रसों का	खण्डकाव्य में किसी एक रस का ही

	समावेश होता है।	प्रयोग किया जाता है।
	रामचरित मानस– तुलसीदास	पंचवटी– मैथिलीशरण गुप्त

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 13. (अ) मुहावरें –

1. खून पसीना एक करना – बहुत मेहनत करना।
   वाक्य – मोहन ने खून पसीना एक कर अपनी मंजिल प्राप्त कर ली।
2. आकाश के तारे तोड़ना – असंभव कार्य करना।
   वाक्य– सानिया ने पदक जीतकर आकाश से तारे तोड़ने जैसा कार्य किया।

(ब) वाक्य परिवर्तन –

1. गौरव पुस्तक नहीं पड़ता है।
2. क्या माता–पिता की सेवा करनी चाहिए?

(स) एक शब्द में उत्तर –

1. तपस्वी।
2. दूरदर्शी।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

(अ) रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद होते है।

1. सरल वाक्य
2. संयुक्त वाक्य
3. मिश्रित वाक्य

(ब) शुद्ध वाक्य –

1. मोहन गेहूं पिसा कर लाया।
2. कुत्ता पूंछ हिलाता हुआ दरबान की तरह दरवाजे पर खड़ा है।

(स) उक्त पंक्तियों में वीभक्त रस है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 14. साहित्य परिचय– **बिहारी**

1. **रचनाएंः–** बिहारी की प्रमुख रचना बिहारी सतसई।
2. **भाव पक्षः–** सतसई में भक्ति, दर्शन, नीति, लोकव्यवहार, ज्योतिष आदि के दोहे संकलित है इसमें इनकी ज्ञान गरिमा का पता चलता है। इसमें प्रेम, सौंदर्य और भक्ति की प्रमुखता है। यह श्रृंगार रस का अथाह सागर है।
3. **कला पक्षः–** कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक मर्मस्पर्शी अर्थ की अभिव्यक्ति आपकी प्रमुख विशेषता है।
4. **साहित्य में स्थानः–** रीतिकालीन रीति सिद्ध और रससिद्ध कवियों में बिहारी का स्थान सर्वोपरि है। श्रृंगार रस के ग्रंथों में बिहारी को विशेष ख्याति मिली है।

5 अंक

अथवा

साहित्य परिचय– **जयशंकर प्रसाद**

1. **रचनाएंः–** आंसू, लहर, झरना, कामायनी।
2. **भाव पक्षः–** प्रसादजी प्रेम और सौन्दर्य के कवि है। उनका काव्य अनुभूति प्रधान है। आपकी रचनाओं में प्रेम, सौन्दर्य और करूणा की त्रिवेणी प्रवाहित होती है।
3. **कला पक्षः–** प्रसादजी का कला पक्ष भावपक्ष की अपेक्षा प्रौढ़ है। आपने संस्कृत गर्भित भाषा का प्रयोग किया है। आपकी रचनाओं में एक–एक शब्द रत्नों की तरह जड़ा हुआ है। भाषा में एक रसता विद्मान है। प्रसाद जी की कविताएं छंद बद्ध और छंद युक्त दोनों ही प्रकार की है।

4. **साहित्य में स्थानः–** कामायनी जैसी काजयी रचना करके स्वयं प्रसाद जी भी कालजयी होकर अमर हो गए। आपकी कविता आज भी सोये हुए लोगों में जागृति का बिगुल फूंक कर नवजीवन का संचार करती है।

5 अंक

उत्तर 15. साहित्य परिचय– **हजारी प्रसाद द्विवेदी**

1. **रचनाएंः–** बाण भट्ट की आत्मकथा, चारू चन्द्र लेखा, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा, अशोक के फूल, कुटज, विचार और वितर्क, आलोक पर्व।
2. **भाषा शैलीः–** द्विवेदी जी की भाषा संस्कृत निष्ठ खड़ी बोली है। इसमें सरलता, गंभीरता विनोद प्रियता और विद्वता का अभूतपूर्ण समन्वय देखने को मिलता है। आप छोटे–छोटे सरल वाक्यों में गंभीर बात कह जाते है।
3. **साहित्य में स्थानः–** हिन्दी साहित्य में आप सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक निबंधकार के रूप में प्रतिष्ठित है।

5 अंक

अथवा

साहित्य परिचय– **पं. रामनारायण उपाध्याय**

रचनाएं :– कुंकम–कलश और आम्रपल्लव, हम तो बाबूल तोरे बाग की चिड़िया, कथाओं की अन्तर्कथाएं, चतुर चिड़िया तथा निमाड़ का लोक साहित्य और उसका इतिहास।

भाव पक्ष कला पक्षः– आपकी रचनाओं में खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग किया है। भाषा सहज, सरल, प्रवाहमय, प्रांजल और बोधगम्य है। चरित्र चित्रण एवं संवाद गतिशील और आकर्षण है। आपके साहित्य में संपूर्ण निमाड़ी लोक साहित्य का समग्र लेखन तो है ही, ललित निबंध, व्यंग्य, रूपक, संस्मरण, रिपोर्ताज और गांधी साहित्य इत्यादि का वैविध्य है।

साहित्य में स्थान :– आपकी वाणी, वेश और आचरण–व्यवहार में जहां गांधीवादी जीवन और विचार परिलक्षित होते थे वहीं ग्राम और ग्राम्य संस्कृति मूर्तिमान होती है।

5 अंक

उत्तर 16. पद्यांश की व्याख्या

संदर्भ :– प्रस्तुत साखियां हमारी पाठ्य पुस्तक के पाठ ''कबीर की साखियां'' से उद्घृत की गई है। इसके कवि श्री कबीरदास है।

प्रसंग :– पहली साखी में कवि ने ईश्वर से अनुनय की है। दूसरी साखी में वृक्षों की महत्ता प्रतिपादित की है।

व्याख्या :– कबीर कहते हैकि उच्च कुल में जन्म लेने से कोई भी व्यक्ति उत्तम नहीं हो जाता, यदि उसके कर्म ऊंचे न हो वह स्वर्णकलश में भरी हुई मदिरा की तरह निन्दनीय है। साधु व्यक्ति के स्वर्ण कलश में जल के स्थान पर मदिरा भरी रहती है, जो अनुपयोगी है उसी प्रकार जो भी साधु की निंदा करता है, वह कर्महीन व्यक्ति की तरह विनाश को प्राप्त करता है।

कबीरदास जी कहते है कि मनुष्य यदि वृक्ष लगाता है उस पर फल लगने लगते है। वह पूर्णतः विकसित होने पर बारह मास फल देता है। वह पर्याप्त शीतलता प्रदान करता है। उसके आश्रय में पक्षी आनंद का अनुभव करता है। अतः मानव व पक्षी सभी के जीवन में वृक्ष का महत्व है।

विशेषः– (1) शांत रस, दोह छंद, कर्म करने की प्रेरणा।

(2) दोहा छंद, शांत रस।

(संदर्भ–1, प्रसंग–1, व्याख्या–2, विशेष–1 कुल 5 अंक)

अथवा

पद्यांश की व्याख्या

संदर्भ :– प्रस्तुत सवैया तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली से उदधृत किया गया है।

प्रसंग :– भगवान श्रीराम के मुख मण्डल के सौन्दर्य की झांकी उपस्थित की है।

व्याख्या :– महाकवि तुलसीदासजी कहते है कि श्रीराम के श्वेत दांतों की पंक्तियां कमल के समान सुशोभित हो रही है। दोनों मधुर होंठ पत्ते के समान सुशोभित हो रहे है। ऐसा लगता है मानों बादलों के बीच बिजली चमक रही हो। उनके ह्रदय पर मोतियों की बहुमूल्य माला शोभायमान हो रही है। उनके घुंघराले बाल की लटें मुंह पर लटक रही थी। कानों में सुंदर कुण्डल पहने थे जिससे कपोलों के सौन्दर्य में वृद्धि हो रही थी।

विशेषः– (1) माधुर्य गुण, सवैया छंद, मुखमण्डल का सौंदर्य।

(संदर्भ–1, प्रसंग–1, व्याख्या–2, विशेष–1 कुल 5 अंक)

उत्तर 17. गद्यांश की व्याख्या

संदर्भ :– प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक के पाठ महापुरूष श्रीकृष्ण से उद्धृत की गई है। इसके लेखक श्री वासुदेव शरण अग्रवाल है।

प्रसंग :– भारतीय संस्कृति का कल्याण श्रीकृष्ण की उपासना में ही निहित है इस भाव का निरूपण लेखक ने किया है।

व्याख्या :– भारतवर्ष की संस्कृति में ईश्वर के अवतारों का अत्याधिक महत्व है। भारतीय जनमानस आध्यात्मिक रूप से श्रीकृष्ण से जुड़ा है। हमारे देश भारत के लिये श्रीकृष्ण अनमोल रत्न है। विश्व के प्रमुख अवतारों में हमारे देश का प्रतिनिधित्व करते है। हमारे राष्ट्र की संस्कृति कृष्ण में ही निहित है। जिस प्रकार प्रपची तथा पश्चिम दिशा में स्थित समुद्र के मध्य में पर्वतों में श्रेष्ठ हिमालय पर्वत वसुंधरा के मानदण्ड की तरह अचल है। जिस प्रकार सहस्त्रों वर्षों से हिमालय पर्वत अटल रूप में स्थित है। उसी प्रकार ईश्वरीय धर्म तथा क्षत्रिय धर्म इन दोनों की मर्यादाओं का निर्वाह करते हुए श्रीकृष्ण का जीवन चरित्र तो स्वयं ही एक काव्य है। मानवीय आत्मा के पूर्णतम विकास में हमें आत्मिक विकास के हर रूप के प्रत्यक्ष दर्शन होते है, इसलिए उनका प्रभाव युग–युगांतर तक व्याप्त है।

(संदर्भ–1, प्रसंग–1, व्याख्या–2, विशेष–1 कुल 5 अंक)

अथवा

गद्यांश की व्याख्या

संदर्भ :– प्रस्तुत पंक्तियां हमारी पाठ्यपुस्तक के पाठ परीक्षा से ली गई है। इसके लेखक मुशी प्रेमचन्द है।

प्रसंग :– दीवान सुजानसिंह उम्मीदवारों की परख किस प्रकार कर रहे है। इस भाव की अभिव्यक्ति की है।

व्याख्या :– सुजान सिंह दीवान पद से मुक्त होना चाहते है इसके लिए उन्हें नये उम्मीदवार की तलाश थी। उम्मीदवारों के चाल–चलन, आत्मबल तथा व्यवहार की महीना भर तक परीक्षा ली जायेगी, उन सभी पर दीवान की पैनी दृष्टि है। जिस प्रकार रत्न की पहचान पारखी के ही द्वारा की जा सकती है उसी प्रकार इन दिखावा करने वालों के बीच सच्चे दीवान को ढूंढ रहे थे। बगुला और हंस दोनों का ही वर्ण सफेद होता है, नीर क्षीर विवेक के ही कारण हंस को पहचाना जा सकता है।

(संदर्भ–1, प्रसंग–1, व्याख्या–2, विशेष–1 कुल 5 अंक)

उत्तर 18. अपठित गद्यांश

1. अनु+उपस्थिति।
2. स्नेहिल मनुष्य या अन्य कोई।
3. मनुष्य अपने प्रियजन की अनुपस्थिति में चिंतित हो जाता है, क्योंकि वह उससे स्नेह करता है। स्नेह वश ही उसे अपने प्रियजन का बाहर जाना या आंखों से परे हो जाना खलने लगता है।
4. वास्तव में प्रेम ऐसी वस्तु है जो बहुत कातर है, उसमें न धीरज है न समझ व केवल आकुलता और अनिष्ट शंका ही घर किए रहती है।
5. उद्यान का पर्यायवाची – बाग, बगीचा, उपवन, वाटिका।

5 अंक

उत्तर 19.

प्रति,

श्रीमान नगर पालिका अधिकारी

नगर निगम, इन्दौर

विषयः– मयूर विहार कॉलोनी की सफाई के संबंध में।

महोदय,

विषयान्तर्गत निवेदन है कि मयूर विहार कॉलोनी वार्ड क्र. 14 में बहुत गंदगी हो गई। जिसे कई महिनों से साफ नहीं किया है। जिसके कारण से अनेक कीटनाशक जीवाणु उत्पन्न हो रहे एवं बिमारी फैल रही है। रास्ते पर अनेक जगह कचरा जमा है जिसमें बहुत गंदगी है।

अतः महोदय जी से पुनः नम्र निवेदन है उक्त कॉलोनी में सफाई करवाने की महती कृपा करेंगे।

दिनांक

भवदीय

समस्त कॉलोनी वासी

(1+3+2 = 5 अंक)

अथवा

प्रिय भाई देवेन्द्र

दिनांक 21.10.2012

सुदामा नगर, इंदौर

मुझे तुम्हारा पत्र कल ही प्राप्त हुआ। तुमने लिखा है कि आजकल क्या कर रहा हूँ। तो भाई मैं आजकल दिल दिमाग से समाचार पत्रों को पढ़ने में जुट गया हूँ। मैं हिन्दी अंग्रेजी दोनों ही समाचार पत्रों को नियमित रूप से पढ़ रहा हूँ। मुझे इनसे बहुत लाभ मिल रहा है। इस विषय में बता रहा हूँ। भाई

समाचार पत्र पढ़ने से लाभ ही लाभ है। देश विदेश की ही नहीं आस पड़ोस की पूरी खबर घर बैठे ही मिल जाती है। समाचार पत्र पढ़ने से अच्छा खासा मनोरंजन हो जाता है यही नहीं विविध प्रकार के शब्द अर्थ और भावों प्रतिक्रियाओं का भी ज्ञान हो जाता है। समाचार पत्र में छपे समाचारों से अपनी स्थिति का पता लगता है। इससे न केवल वर्तमान अपितु भूत और भविष्य की भी रूप रेखा समझ में आ जाती है। अतएव समाचार पत्र की उपयोगिता नहीं भूलना चाहिए।

आशा है भाई, आप मेरे सुझावानुसार नियमित रूप से समाचार पत्र पढ़कर लाभ उठाओगे। मेरी ओर से माताजी और पिताजी को सादर चरण स्पर्श, लघु बंधुओं को शुभाशीर्वाद

तुम्हारा भाई
सक्षम राठौर

(1+3+2 = 5 अंक)

उत्तर 20. **निबंध लेखन–**

पर्यावरण प्रदूषण

'मानवता पर बढ़ रह सत्त प्रदूषण भार।
मनुज अचेतन हो रहा कैसे हो उद्धार।।'

1. प्रस्तावना
2. वैज्ञानिक प्रगति और प्रदूषण
3. प्रदूषण का घातक प्रभाव
4. पर्यावरण शुद्धि
5. उपसंहार

प्रस्तावना – पृथ्वी का निर्माण करते समय प्रकृति की गोद में उज्जवल प्रकाश, शीतल जल एवं कोमल वायु नामक वरदान डालकर मनुष्य एवं अन्य जीव

जंतुओं को एक स्वच्छ वातावरण दिया था जिसे मनुष्य में सरहदे खींचकर अपनी अभिलाषाएं पूरी करने हेतु प्रकृति को स्वामिनी के महत्वपूर्ण पद से हटाकर दासी के स्थान पर प्रतिष्ठित कर दिया हैं। मानव मन की जिज्ञासा और नयी–नयी खोजो की भूख ने प्रकृति के सरल कार्यों में हस्तक्षेप करना मुख्यतः चार स्वरूपों में दिखता है :–

(1) वायु प्रदूषण, (2) जल प्रदूषण, (3) प्रदूषण एवं (4) ध्वनि प्रदूषण

अंधकारमय भविष्य – मनुष्य ने वैज्ञानिक प्रगति की आंधी में बहकर वायु, जल, भूमि एवं ध्वनि प्रदूषण इतना बढ़ा दिया है कि उसके प्रकोप अब पलटकर मनुष्य पर ही पड़ रहे है मनुष्य ने प्रकृति को इतना विकृत कर दिया है कि यह किसी के लिए भी हितकर नहीं रहा है। पर्यावरण एक व्यापक शब्द है, जिसका समान अर्थ है–प्रकृति द्वारा प्रदान किया गया समस्त भौतिक और सामाजिक वातावरण। इसमें जल, वायु, भूमि, पेड़ पौधे, पर्वत तथा प्राकृतिक संपदा और परिस्थितियां आदि का समावेश होता है।

आज पर्यावरण प्रदूषण की वजह से जीवन दुखमय हो गया है। मनुष्य ने खनिजों हेतु खनन व्यापक स्तर पर किया एवं व्यापार के नाम पर बड़े–बड़े जहरीला धुआ उगलने वाले कारखानों का निर्माण किया है। इन्ही कारखानों ने जल में अपना कचरा फैलाया जिससे जल प्रदूषण बढ़ा। जंगलों को तो बचने भी नहीं दिया जिससे प्राणियों के रहने की जगह की समस्या उत्पन्न हो गई। वैज्ञानिक प्रगति की मोह माया में मनुष्य ने अपनी माता तुल्य गंगा मैया तक नहीं बख्शा है। कृषि में रासायनिक खाद को प्रयेग में लाकर मनुष्य ने अनेक प्रकार के रोगों एवं विषैले प्रभाव को जन्म दिया है। इस प्रकार वैज्ञानिक प्रगति पर्यावरण प्रदूषण में सहायक बनी।

प्रदूषण का घातक प्रभाव – आधुनिक युग में संपूर्ण संसार पर्यावरण के प्रदूषण से पीड़ित हैं। हर सांस के साथ इसका जहर शरीर में प्रवेश पाता है और तरह–तरह की विकृतियां पनपती है। इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता कि प्रदूषण की इस बढ़ती हुई गति से एक दिन पृथ्वी प्राणी तथा

वनस्पतियों से विहीन हो सकती है। एवं सभ्यता तथा प्रगति एक बीती हुई कहानी बनकर रह जाएगी।

पर्यावरण शुद्धि – दिनोंदिन बढ़ने वाले प्रदूषण की आपदा से बचाव का मार्ग खोजना आज की महती आवश्यकता है। इसके लिए सबको एकजुट होकर इन विनाशकारी ताकतों से दो–दो हाथ करने होंगे। वृक्षों की रक्षा कर इस महान् एवं दुष्ट संकट से मुक्ति पाई जा सकती है। ये हानिकारक गैसों के प्रभाव को नष्ट करके प्राण वायु प्रदान करते है, भूमि के क्षरण को रोकते है एवं पर्यावरण को स्वच्छ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करते हैं।

उपसंहार – पर्यावरण की सुरक्षा और उचित संतुलन के लिए हमें जागरुक और सचेत होना परम आवश्यक है। वायु, जल ध्वनि, भूमि तथा प्रकृति के प्रत्येक अंश के प्रति हमारी जिम्मेदारी होती है कि हम उसका सदुपयोग करें एवं आने वाली पीढ़ी को एक बेहतर पर्यावरण प्रदान करें। मनुष्य को अपनी अभिलाषाओं एवं प्रकृति की संवेदनाओं की बीच संतुलन बनाना ही होगा अन्यथा विनाश की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी।

प्रस्तुतिकरण 2 अंक, विषयवस्तु 4 अंक, भाषाशैली 2 अंक, उपसंहार 2 अंक।

उपरोक्तानुसार लिखने पर पूर्ण 10 अंक 10 अंक प्राप्त होंगे

– – – – – –